ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

फरवरी 2019 (प्रथम)

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन विशेषांक

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में स्वामी देवव्रत जी अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य आर्य नरेश अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य सोमदेव जी अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री विनय आर्य मंत्री दिल्ली सभा अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में डा० धर्मदेव विद्यार्थी अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में पंजाब सभा मंत्री श्री प्रेम भारद्वाज अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री वेदपाल आर्य अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य ऋषिपाल जी अपने विचार रखते हुए।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,119
विक्रम संवत् 2075
दयानन्दाब्द 195

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 15 अंक 1

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993, 7082783793

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

फरवरी, 2019 (प्रथम)

1 से 15 फरवरी, 2019 तक

इस अंक में....

1. पूज्य आचार्य बलदेव स्मृति दिवस पर आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न 2
2. आर्यसमाज को नए सिरे से मजबूत करना होगा 4
3. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी 6
4. भारत में बुराइयों के बढ़ने के कारण एवं समाधान 8
5. धर्म शहीद वीर बालक हकीकतराय 9
6. कविता–प्रभु तेरी प्रीति का प्यार निराला 10
7. मनुष्य और जीवात्मा 11
8. ऋषि की फटकार, शिक्षा व दया 13
कविता–रक्तदान का गीत 14
9. कुछ शंकाओं का समाधान 15
10. जन्मदिन तथा गृहप्रवेश पर वेदप्रचार 16

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

–सम्पादक

पूज्य आचार्य बलदेव स्मृति पर दयानन्दमठ रोहतक में

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न

हरयाणा और हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल ने दी शिरकत

❑ रामपाल आर्य, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

रोहतक (27.01.2019)। पूज्य आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में **प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन** दयानन्दमठ रोहतक में प्रातः 9 बजे यज्ञ से आरम्भ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सत्यजित् जी, वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुजरात), आचार्य सर्वमित्र आर्य सभा-प्रस्तोता एवं यजमान श्री रोशनलाल आर्य वरिष्ठ अन्तरंग सदस्य के पौत्र राहुल आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती नेहा आर्या, श्री सुदीप आर्य व श्रीमती एकता आर्या, श्री हरप्रीत आर्य व श्रीमती दीपिका आर्या, श्री रवीन्द्र दहिया व श्रीमती अल्का आर्या आदि रहे।

उसके बाद सम्मेलन की कार्यवाही मंच से प्रारम्भ हुई। महासम्मेलन की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने की। मुख्य अतिथि हरियाणा प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री सत्यदेवनारायण आर्य तथा विशिष्ट अतिथि महाशय धर्मपाल आर्य एम.डी.एच. दिल्ली, श्री राजेश जैन चेयरमैन एल.पी.एस. बोसार्ड रहे। पूरे हरियाणा, होडल, फिरोजपुर झिरका से पंचकूला, कालका तथा नारनौल महेन्द्रगढ़ से डबवाली, कालांवाली तक सभी आर्यसमाजों से बीस हजार से भी अधिक की संख्या में आर्यजन भारी उत्साह से दयानन्दमठ रोहतक में पहुँचे। मंच का संचालन सभामन्त्री श्री उमेद शर्मा ने किया। आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक उपेन्द्र आर्य, श्रीमती सुमित्रा आर्या, सतवन्ती आर्या, श्रीमती दया आर्या, श्री सत्यपाल मधुर आदि ने अपने मधुर भजनों द्वारा श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया।

सभाप्रधान मा० रामपाल आर्य ने आज महासम्मेलन में पधारे मुख्य अतिथियों, संन्यासियों, विद्वानों व सभी आर्यसमाजों से पहुँचे आर्यजनों का अपनी ओर से व समस्त कार्यकारिणी की ओर से स्वागत, अभिनन्दन किया तथा महासम्मेलन में इतनी सर्दी के बावजूद भी उमड़ी भारी भीड़ पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन सभी का धन्यवाद किया।

मा० रामपाल आर्य ने सभा के दो वर्ष की उपलब्धियाँ, जो हम आपके सहयोग से कर पाए हैं, जिक्र करते हुए बताया कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद में 22½ एकड़, पानीपत जी.टी. रोड पर 4½ एकड़ व पिल्लूखेड़ा जीन्द एक एकड़ से कब्जे छुड़वाए, डॉ० आर.एस. सांगवान के सहयोग से सिरसा की तीन संस्थाएँ, नरवाना के सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल व पानीपत का आर्य कॉलेज वापिस आने वाले हैं, ओल्ड फरीदाबाद का हमारे पक्ष में कोर्ट का फैसला हो चुका है। सभा का पूरा रिकार्ड चोरी हो गया था, उस रिकार्ड की प्रतिलिपि हम लगभग सभा कार्यालय में ले आए हैं। 14 वेदप्रचार वाहनों द्वारा पूरे हरियाणा में वेदों का प्रचार चल रहा है, दयानन्दमठ के हालात आपके सामने है, बताने की आवश्यकता नहीं है। स्वामी दयानन्द का पूरा साहित्य सभा की वेबसाईट पर डाला व सत्यार्थप्रकाश को 23 भाषाओं में 67 देश हमारी वेबसाईट से जुड़ गए।

आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में मा० रामपाल आर्य सभाप्रधान ने आर्यसमाज के भविष्य पर अपने दिल की पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा कि आज इस मंच पर आर्यजगत् के नेता, मूर्धन्य संन्यासी, वैदिक विद्वान्, सार्वदेशिक सभा के प्रधान, मंत्री, स्वामी दयानन्द जी की उत्तराधिकारिणी सभा, परोपकारिणी सभा अजमेर के संरक्षक, प्रधान, उपप्रधान, मन्त्री, सदस्य, वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुजरात) का दायित्व संभाले हुए आचार्य सत्यजित्, दिल्ली, पंजाब व हरियाणा सभा के अधिकारी व 20 हजार से अधिक की उपस्थिति में आर्यसमाज के शुभचिन्तक बैठे हैं। मेरी पीड़ा को आलोचना की भट्ठी में भस्म न कर देना। मैं अपने जीवन में कभी

आलोचना करने में विश्वास नहीं किया बल्कि कार्य करने में मेरा विश्वास रहता है। आर्षपाठविधि द्वारा संन्यासी, विद्वान् तैयार होते हैं व उन संस्थाओं की ओर झांकते हुए आर्षपाठविधि को कैसे बचाया जा सकता है, उस पर गम्भीरता से आप सभी को चिन्तन करना है। इसलिए आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर आपको आमंत्रित किया है। आपको यहाँ प्रवचन के लिए नहीं बल्कि इस विषय पर चिन्तन करके भविष्य में तीन या चार दिन सभी संन्यासी, विद्वान्, गुरुकुलों के आचार्यों तथा आर्यजगत् के अन्य प्रबुद्ध व्यक्तियों केवल इस विषय पर चिन्तन करने के लिए बुलाया जाए यह मेरा सुझाव भी है और इस आयोजन में आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को जो जिम्मेदारी सौंपेंगे उसे हम पूरा करेंगे। यह गोष्ठी शीघ्र बुलाई जाए और इसका जिम्मा सार्वदेशिक सभा दिल्ली, परोपकारिणी सभा अजमेर, वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ गुजरात मिल बैठकर अपने ऊपर लेने का कष्ट करें। मा० रामपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने सम्मेलन को सफल बनाने में सभी वेदप्रचार मण्डल के प्रधानों, सभी शिक्षण संस्थाओं, सभी आर्यसमाज के अधिकारियों का अपनी तथा कार्यकारिणी की ओर से धन्यवाद किया।

इस महासम्मेलन में सभा ने निर्णय लिया है कि प्रतिवर्ष आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर एक संन्यासी व एक विद्वान् को सम्मानित किया जाएगा। इस वर्ष स्वामी देवव्रत अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल व आचार्य आर्यनरेश हिमाचल प्रदेश को **'आचार्य बलदेव स्मृति वेदप्रचार सम्मान'** से सम्मानित किया गया।

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत आर्य ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियाँ ऐसी ही रहीं, तो आर्यसमाज के प्रचारक मिलने बन्द हो जायेंगे, क्योंकि पुराने प्रचारक जा रहे हैं, जबकि नए आने कम हो गए हैं। इस गम्भीर समस्या के समाधान के लिए सुझाव दिए, एक तो प्रचारक तैयार किया जाए, दूसरा आर्य वीर दल अपनी भूमिका सक्रियता से निभाते हुए कार्यकर्त्ता तैयार करके उन्हें आर्यसमाज में दीक्षित करें। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से आचार्य बलदेव स्मृति पर दयानन्दमठ रोहतक में रविवार को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि यही आचार्य बलदेव जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आचार्य जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को आश्वस्त करते हुए घोषणा की कि आर्थिक कठिनाई आपको नहीं आने देंगे। अप्रैल में चार वेदप्रचार वाहन सभा को प्रचार के लिए और भेंट कर देंगे, जिनकी लागत 35 लाख रुपये होगी।

हरयाणा प्रदेश के राज्यपाल श्री सत्यदेवनारायण आर्य ने महर्षि दयानन्द के दिखाए मार्ग पर चलते हुए, शिक्षित बनने, संगठित होने और अधिकार के लिए संघर्ष करने का आह्वान किया। उन्होंने ऋषि दयानन्द द्वारा समाज पर अनेक उपकारों के साथ देश को स्वतन्त्र कराने का भी श्रेय दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की कार्यशैली और उनकी सुन्दर व्यवस्थाओं से प्रसन्न होकर 21 लाख रुपये की सहयोग राशि की घोषणा करते हुए कहा कि पूरे देश की सभाओं को भी इसी प्रकार की भूमिका समाज सुधार के कार्यों में निभानी चाहिए।

महाशय धर्मपाल आर्य एम.डी.एच. दिल्ली, जिनको आर्यसमाज का भामाशाह कहकर पुकारा जाता है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि मेरा आशीर्वाद आपके साथ हमेशा-हमेशा के लिए रहेगा, क्योंकि आप बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। उन्होंने खुश होकर दस लाख रुपये की सहयोग राशि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को देने की घोषणा करते हुए कहा कि जब तक मैं जीऊँगा इसी प्रकार सभा का सहयोग करता रहूँगा। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित माता चन्नन देवी कन्या गुरुकुल पिल्लूखेड़ा जिला जीन्द में एक करोड़ एक लाख की सहयोग राशि वे पहले दे चुके थे और 30 लाख रुपये की दो बसें और गुरुकुल की लड़कियों के लिए देने की घोषणा भी कर गए, जिसका स्वामी धर्मदेव जी ने धन्यवाद किया।

श्री राजेश जैन चेयरमैन एल.पी.एस. बोसार्ड ने भी सभा के कार्य करने की शैली से खुश होकर पांच लाख रुपये की सहायता राशि देकर सभा का सहयोग किया।

सभा की ओर से संरक्षक डॉ० सुरेन्द्रकुमार, डॉ० वेदपाल आर्य नवनिर्वाचित प्रधान, मन्त्री श्री कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान ओममुनि, पुस्तकाध्यक्ष श्रीमती ज्योत्स्ना, स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारिणी सभा परोपकारिणी सभा

शेष पृष्ठ 5 पर....

दयानन्दमठ रोहतक में आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में बोले राज्यपाल

आर्यसमाज को नए सिरे से मजबूत करना होगा

रोहतक। पूज्य आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में मुख्य अतिथि प्रदेश के राज्यपाल श्री सत्यदेव नारायण आर्य को स्मृति चिह्न देते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी व मौजूद आर्यजन।

रोहतक। प्रदेश के राज्यपाल श्री सत्यदेव नारायण आर्य ने कहा कि देश को खुशहाल बनाने के लिए सभी को मिलकर आर्यसमाज को फिर से मजबूत करना होगा। समाज के सदस्यों की संख्या भी बढ़ानी होगी। गवर्नर रविवार दोपहर को दयानन्द मठ में आचार्य बलदेव जी की स्मृति में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित लोगों को सम्बोधित कर रहे थे।

1857 की क्रान्ति के सूत्रधार थे सरस्वती–राज्यपाल ने कहा कि 1857 की क्रान्ति की सम्पूर्ण कार्य योजना स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा तैयार की गई थी। उसके बाद ही भारत को आजादी मिली थी। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने कहा था कि यदि हम महर्षि दयानन्द की नीतियों पर चलते तो देश कभी नहीं बंटता। आज देश में जो भी कार्य चल रहे हैं, उनका मार्ग स्वामी जी ने वर्षों पूर्व बना दिया था। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द व सरदार पटेल के दिखाए हुए रास्ते पर चलकर फिर से भारत को विश्वगुरु बनाया जा सकता है।

समाज को एक सूत्र में पिरोया–राज्यपाल ने कहा कि समाज को सुधारने के लिए स्वामी दयानन्द द्वारा उल्लेखनीय कार्य किए गए हैं। उन्होंने विभिन्न सामाजिक कुरीतियों को समाप्त कर समाज को एक सूत्र में पिरोने का काम किया। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द द्वारा लिखी गई पुस्तक सत्यार्थप्रकाश आर्यसमाज का मूल ग्रन्थ है। इस ग्रंथ से ही हिन्दुत्व की रक्षा हुई थी। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द ने ही महिलाओं को शिक्षित करने की जोरदार अपील की थी और विधवा विवाह के लिए समाज में आवाज को बुलंद किया था।

सभा को सम्बोधित करते हरयाणा एवं हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल।

आचार्य बलदेव को याद रखेगी पीढ़ियाँ–आचार्य बलदेव को श्रद्धांजलि देते हुए राज्यपाल ने कहा कि देश व समाज की भलाई के लिए उन्होंने सरकारी नौकरी को त्याग कर समाज की सेवा करने का कार्य किया था। उन्होंने घर-घर जाकर लोगों को जागृत किया। गोसंरक्षण के लिए भी उनकी अहम् भूमिका रही। इसलिए ही आज देश में आदर के साथ उनका नाम लिया जाता है। डॉ. अम्बेडकर की **'शिक्षित बनो, संगठित रहो व संघर्ष करो'** की बात को दोहराते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में शिक्षा का बड़ा महत्त्व है। शिक्षा के बिना कोई भी व्यक्ति देश व दुनिया की पहचान नहीं कर पाएगा।

21 लाख रुपये देने की घोषणा–उन्होंने कहा कि अम्बेडकर ने उस समय महिला शिक्षा पर बल दिया था जब महिलाओं को शिक्षित करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने **'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'** कार्यक्रम आरम्भ करके डॉ. अम्बेडकर के सपने को साकार करने का कार्य किया

है। राज्यपाल ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को 21 लाख रुपये की अनुदान राशि देने की भी घोषणा की।

आर्यसमाज से जोड़े युवा कार्यकर्त्ता-कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने लोगों का आह्वान किया कि वेदप्रचार और युवा कार्यकर्त्ताओं को आर्यसमाज से जोड़ने की दिशा में कार्य करें ताकि वेदों और ऋषि दयानन्द सरस्वती जी की विचारधारा को आगे बढ़ाया जा सके। उन्होंने इस बात पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि आज आर्यसमाज की संस्थाओं से पुराने प्रचारक जा रहे हैं और नये के आने की व्यवस्था नहीं है। सक्रिय प्रचारक न होने के कारण इन संस्थाओं में उत्सव होने बन्द हो गए हैं।

राज्यपाल ने सुझाव दिया कि इसके लिए इन संस्थाओं में दो विभाग चलने चाहियें। एक वेदप्रचार का विभाग और दूसरा कार्यकर्त्ताओं का, जैसे आर्य वीर दल। गुरुकुल कुरुक्षेत्र, राज्यपाल की कर्मभूमि रही है, में आज वेदप्रचार का अलग से विभाग स्थापित किया गया है। इसके अलावा, आर्ष विद्यालय और भजनोपदेशक विभाग अलग से स्थापित किए गए हैं। इन संस्थानों में कार्य नि:शुल्क रूप से कार्यान्वित किया जा रहा है।

कार्यों की प्रशंसा-राज्यपाल ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार के लिए किये जा रहे कार्यों के लिए प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि इसी तरह युवाओं को आर्यसमाज में दीक्षित करें ताकि ये संगठन और मजबूत हो सके। समाज में फैले नशे, अज्ञान और अंधविश्वास को समाप्त करने के लिये बच्चों में आर्यसमाज के संस्कार देने की आवश्यकता है। उन्होंने आचार्य बलदेव जी को याद करते हुए कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने उनकी स्मृति पर कार्यक्रम कर सराहनीय कार्य किया है।

राज्यपाल आर्यसमाज को देंगे चार वाहन-राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि आर्यसमाज का मिशन आगे बढ़ना चाहिए ताकि भावी पीढ़ी वैदिकधर्मी बन सके। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को वेदप्रचार के लिए चार रथ (वाहन) देने की घोषणा की। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान रामपाल आर्य ने राज्यपाल का स्वागत किया तथा सभी की विभिन्न गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। **(साभार : हरिभूमि)**

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन.... पृष्ठ 3 का शेष.....

(अजमेर), वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुजरात) का दायित्व संभाले हुए आचार्य सत्यजित् आर्य सभी संन्यासी एवं विद्वानों को भी सम्मानित किया गया।

इस महासम्मेलन में मुख्यवक्ता के रूप में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम आचार्य देवव्रत जी, हरियाणा प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री सत्यदेव नारायण आर्य, श्री महाशय धर्मपाल जी चेयरमैन एम.डी.एच दिल्ली, श्री प्रकाश आर्य, मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री राजेश जैन चेयरमैन एल.पी.एस. बोसार्ड, आचार्य आर्यनरेश हिमाचल प्रदेश, श्री राजवीर आर्य उपकुलपति एमडीयू रोहतक, डॉ. सुरेन्द्रकुमार संरक्षक परोपकारिणी सभा अजमेर, डॉ. वेदपाल प्रधान, श्री ओममुनि उपप्रधान अजमेर, श्री कन्हैयालाल आर्य मंत्री, श्रीमती ज्योत्स्ना अजमेर, श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री विनय आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आचार्य सत्यजित् वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुजरात), डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार कुरुक्षेत्र, आचार्य सोमदेव अजमेर, श्री प्रेम भारद्वाज मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री अशोक परूथी, रजिस्ट्रार, डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी क्षेत्रीय निदेशक, डी.ए.वी. जीन्द जोन, आचार्य वेदमित्र रोहतक, स्वामी देवव्रत अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य वीर दल, स्वामी धर्ममुनि बहादुरगढ़, स्वामी विदेहयोगी कुरुक्षेत्र, स्वामी ध्रुवदेव रोजड़, स्वामी बलेश्वरानन्द पुण्डरी (कैथल), स्वामी धर्मदेव पिल्लूखेड़ा (जीन्द,) स्वामी सोमानन्द रोजड़ (गुजरात), आचार्य हरिदत्त गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक), आचार्य वेदनिष्ठ गुरुकुल जूआँ (सोनीपत), आचार्य ऋषिपाल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) आचार्या राजनमान गुरुकुल लोवाकलां (झज्जर) आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार रखे।

भोजन व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए श्री हवासिंह राठी, श्री कर्णसिंह मोर, श्री सुभाष सांगवान, श्री निगम मुनि, श्री सत्यपाल आर्य, बलराज खुराना, राजेश आर्य, अनूप श्योराण, श्री ज्ञानसिंह एवं श्री गुलिया जी तथा श्री वेदप्रकाश आर्य मन्त्री आर्य वीर दल हरयाणा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इन्होंनें पूरे तन-मन से भोजन की व्यवस्था सुचारु रूप से की।

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

एकादश समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 866. अजामिल की कथा क्या है?

उत्तर-अजामिल की कथा ऊटपटांग लिखी है-उसने

नारद के कहने से अपने लड़के का नाम 'नारायण' रखा। मरते समय अपने पुत्र को पुकारा। बीच में नारायण कूद पड़े। क्या नारायण उसके अन्त:करण के भाव को नहीं जानते थे कि वह अपने पुत्र को पुकारता है, मुझको नहीं? जो ऐसा ही नाम माहात्म्य है तो आजकल भी नारायण के स्मरण करने वालों के दु:ख छुड़ाने को क्यों नहीं आते? यदि यह बात सच्ची हो तो कैदी लोग 'नारायण-नारायण' करके क्यों नहीं छूट जाते?

प्रश्न 867. यदि भागवत पुराण ऋषि वेदव्यास का बनाया नहीं है, तो फिर किसका बनाया हुआ है?

उत्तर-भागवत पुराण एक बोब देव नाम के पंडित ने बनाया है, ऐसा स्वयं उसने अपने ही बनाये एक दूसरे ग्रन्थ 'हिमाद्रि' में लिखा है।

प्रश्न 868. योगिराज श्रीकृष्ण के बारे में महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार कैसे हैं और भागवत के रचयिताओं ने उन पर कैसे दोष लगाये हैं?

उत्तर-देखो! श्रीकृष्णजी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्तपुरुषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाये हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण जी में लगाये हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्य मत वाले श्रीकृष्ण जी की बहुत-सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्णजी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती।

प्रश्न 869. 'शिवपुराण' में 12 ज्योतिर्लिंग लिखे हैं, उनकी कथा कैसी है?

उत्तर-उनकी कथा सर्वथा असम्भव है। नाम धरा है ज्योतिर्लिंग और जिनमें प्रकाश का लेश भी नहीं। रात्रि को बिना दीप किए लिंग भी अन्धेरे में नहीं दिखते। ये सब लीला पोपों जी की है।

प्रश्न 870. जब वेद पढ़ने का सामर्थ्य नहीं रहा तब स्मृति, जब स्मृति के पढ़ने की बुद्धि नहीं रही तब शास्त्र, जब शास्त्र पढ़ने का सामर्थ्य नहीं रहा तब पुराण बनाये- केवल स्त्री और शूद्रों के लिए, क्योंकि इनको वेद पढ़ने-सुनने का अधिकार नहीं।

उत्तर-यह बात मिथ्या है। क्योंकि सामर्थ्य पढ़ने-पढ़ाने ही से होता है और वेद पढ़ने-सुनने का अधिकार सबको है। देखो! गार्गी आदि स्त्रियाँ और छान्दोग्य में जानश्रुति शूद्र ने भी वेद 'रैक्यमुनि' के पास पढ़ा था। और यजुवेद के 26वें अध्याय के दूसरे मन्त्र में स्पष्ट लिखा है कि वेदों के पढ़ने और सुनने का अधिकार मनुष्यमात्र को है। पुन: जो ऐसे-ऐसे मिथ्या ग्रन्थ बना लोगों को सत्यग्रन्थों से विमुख कर जाल में फँसाकर अपने प्रयोजन को साधते हैं, वे महापापी क्यों नहीं?

प्रश्न 871. ग्रहों का फल होता है वा नहीं?

उत्तर-जैसा पोपलीला का है, वैसा नहीं? किन्तु जैसा सूर्य-चन्द्रमा की किरण द्वारा उष्णता शीतता अथवा ऋतुवत्कालचक्र के सम्बन्धमात्र से अपनी प्रकृति के अनुकूल-प्रतिकूल सुख-दु:ख के निमित्त होते हैं, परन्तु जो पोपलीला वाले कहते हैं, 'सुनो महाराज! सेठ जी! यजमानो! तुम्हारे आज आठवाँ चन्द्र-सूर्यादि क्रूर घर में आये हैं। अढ़ाई वर्ष का शनैश्चर पग में आया है। तुमको बड़ा विघ्न होगा। घर-द्वार छोड़कर पदेश में घुमावेगा। परन्तु जो तुम ग्रहों का दान, जप, पाठ, पूजा कराओगे तो दु:ख से बचोगे।' इनसे कहना चाहिए कि 'सुनो पोपजी'! तुम्हारा और ग्रहों का क्या सम्बन्ध है? उन पोपों से पूछना चाहिए कि तुमको दान देने से ग्रह प्रसन्न और न देने से अप्रसन्न होते हों तो हमको सूर्यादि ग्रहों की प्रसन्नता-अप्रसन्नता प्रत्यक्ष दिखलाओ। जिसको 8वां सूर्य चन्द्र और दूसरे को तीसरा हो, उन दोनों को ज्येष्ठ महीने में बिना जूते पहिने तपी हुई भूमि पर

चलाओ। जिस पर प्रसन्न हैं, उसके पग-शरीर न जलने और जिसके क्रोधित हैं उनके जल जाने चाहिएं। तथा पौष मास में दोनों को नंगे कर पौर्णमासी की रात्रि भर मैदान में रखें। एक को शीत लगे, दूसरे को नहीं, तो जाने कि ग्रह क्रूर और सौम्य दृष्टि वाले होते हैं। और क्या ग्रह तुम्हारे सम्बन्धी हैं? और तुम्हारी डाक व तार उनके पास आता-जाता है? अथवा तुम उनके वा वे तुम्हारे पास आते-जाते हैं? जो तुम कहो कि नहीं, हम ही को देने से वे प्रसन्न होते हैं, अन्य को देने से नहीं, तो क्या तुमने ग्रहों का ठेका ले लिया है? जो ठेका लिया हो तो सूर्यादि को अपने घर में बुलाके जल मरो। सच तो यह है कि सूर्यादि लोक जड़ हैं। वे न किसी को दु:ख और न सुख देने की चेष्टा कर सकते हैं।

प्रश्न 872. ज्योतिषी सूर्य-चन्द्र ग्रहण का समय पहले बता देते हैं, तो ज्योतिष सच्चा क्यों नहीं? धनाढ्य, दरिद्र, राजा-रंक, सुखी-दु:खी ग्रहों से ही तो होते हैं?

उत्तर-जो ग्रहण रूप प्रत्यक्ष फल है सो गणित विद्या का है, फलित का नहीं। जो गणितविद्या है वह सच्ची और फलितविद्या स्वाभाविक सम्बन्ध-जन्य को छोड़ के झूठी है।

प्रश्न 873. सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण कैसे होते हैं?

उत्तर-जब सूर्य और भूमि के मध्य में चन्द्रमा आता है तब सूर्यग्रहण और जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच पृथ्वी आती है तो चन्द्रग्रहण होता है।

प्रश्न 874. मरे हुए जीव की क्या गति होती है?

उत्तर-जैसे उसके कर्म होते हैं।

प्रश्न 875. जो यमराज राजा, चित्रगुप्त मंत्री, उसके बड़े भयंकर गण कज्जल के पर्वत के तुल्य शरीर वाले जीव को पकड़ कर ले जाते हैं, पाप-पुण्य के अनुसार नरक-स्वर्ग में डालते हैं। उसके लिए दान, पुण्य, श्राद्ध, तर्पण, गोदानादि वैतरणी नदी तरने के लिए करते हैं, ये सब बातें झूठ क्योंकर हो सकती हैं?

उत्तर-ये सब बातें पोपलीला के गपोड़े हैं। जो अन्यत्र के जीव वहाँ जाते हैं, उनका धर्मराज चित्रगुप्त आदि न्याय करते हैं, तो वे यमलोक के जीव पाप करें तो दूसरा यमलोक मानना चाहिए कि वहाँ के न्यायाधीश उनका न्याय करें। और पर्वत के समान यमगणों के शरीर हों तो दिखते क्यों नहीं? जब जंगल में आग लगती है तब एकदम पिपीलिकादि जीवों के शरीर छूटते हैं। उनको पकड़ने के लिए असंख्य यम के गण आवें तो वहाँ अन्धकार हो जाना चाहिए और जब आपस में जीवों को पकड़ने को दौड़ेंगे तब कभी उनके शरीर ठोकर खा जायेंगे तो जैसे पहाड़ के बड़े-बड़े शिखर टूटकर पृथ्वी पर गिरते हैं, वैसे उनके बड़े अवयव गरुड़ पुराण के बाँचने वालों के आंगन में गिर पड़ेंगे तो वे दब मरेंगे वा घर का द्वार अथवा सड़क रुक जाएगी, तो वे कैसे निकल और चल सकेंगे?

प्रश्न 876. श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान मृतक तक तो अवश्य पहुँचता होगा?

उत्तर-श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान उन मरे हुए जीवों को तो नहीं पहुँचता, किन्तु मृतकों के प्रतिनिधि पोपजी के घर, उदर और हाथ में अवश्य पहुँचता है। जो वैतरणी के लिए गोदान लेते हैं, वह तो पोप जी के घर में अथवा कसाई आदि के घर में पहुँचता है। वैतरणी पर गाय नहीं जाती पुन: किसकी पूंछ पकड़कर तरेगा? और हाथ तो यहीं जलाया व गाड़ दिया गया, फिर पूंछ को कैसे पकड़ेगा?

प्रश्न 877. स्वर्ग में कुछ नहीं मिलता, जो दान किया जाता है वही वहाँ मिलता है, इसलिए सब दान करना चाहिए?

उत्तर-उस तुम्हारे स्वर्ग से यहीलोक अच्छा, जिसमें धर्मशाला हैं, लोग दान देते हैं, इष्ट-मित्र और जाति में खूब निमन्त्रण होते हैं, अच्छे-अच्छे वस्त्र मिलते हैं, तुम्हारे कहने प्रमाणे स्वर्ग में कुछ भी नहीं मिलता। ऐसे निर्दय, कृपण, कंगले स्वर्ग में पोप जी जाके खराब होवें, वहाँ भले-भले मनुष्यों का क्या काम?

प्रश्न 878. यदि यम लोक और यम नहीं हैं, तो मरकर जीव कहाँ जाता और इनका न्याय कौन करता है?

उत्तर-वेदवचनों से निश्चय है कि 'यम' नाम वायु का है, शरीर छोड़ 'वायु' के साथ अन्तरिक्ष में जीव रहते हैं और जो सत्यकर्ता पक्षपातरहित परमात्मा 'धर्मराज' है, वही सब का न्यायकर्त्ता है।

प्रश्न 879. क्या किसी को गोदान देना या अन्य दान देना ठीक नहीं है?

उत्तर-यह तुम्हारा कहना सर्वथा व्यर्थ है, क्योंकि सुपात्रों को, परोपकारियों को परोपकारार्थ सोना, चांदी, हीरा, मोती, माणिक, अन्न, जल, स्थान, वस्त्र, गाय आदि का दान करना अवश्य उचित है, किन्तु कुपात्रों को कभी न देना चाहिए।

क्रमशः अगले अंक में...

भारत में बुराइयों के बढ़ने के कारण एवं समाधान

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

गतांक से आगे....

शरीर नित्य रहने वाला नहीं है, धन सम्पदा भी अनित्य है और मृत्यु हर समय सिर पर मंडराती रहती है। इसलिये शीघ्र ही धर्म का संग्रह करना चाहिये।

मनुष्य की सब कामना परिपूर्ण करने वाले परमेश्वर की आज्ञा पालन करके और अच्छी प्रकार पुरुषार्थ से विद्या का अध्ययन, विज्ञान, शरीर का बल, मन की शुद्धि, कल्याण की सिद्धि तथा उत्तम से उत्तम लक्ष्मी की प्राप्ति सदैव करनी चाहिए। इस सम्पूर्ण यज्ञ की धारणा व उन्नति के सब सुखों को प्राप्त होकर, औरों को सुख प्राप्त कराना चाहिये तथा सब व्यवहार और पदार्थों को नित्य शुद्ध करना चाहिये। (29/2 अध्याय यजुर्वेद)।

हिन्दू समाज आज पाखण्ड को त्यागकर धर्म मार्ग का पथिक बन जाये तो उसकी इतनी बुरी अवस्था सदा के लिये दूर हो सकती है।

किसी समाज के संगठन के लिए निश्चित सिद्धान्तों की बहुत बड़ी आवश्यकता है। हिन्दू जाति के वर्तमान असंगठन का कारण यह है कि इसके सिद्धान्त निश्चित नहीं रहे जो आया उसने मनमानी की और हिन्दू जाति के टुकड़े-टुकड़े हो गये। महर्षि दयानन्द ने हिन्दू जाति के बर्बाद होने के रोग का निराकरण किया और समस्त जाति को एक सूत्र में बांधने का प्रयत्न किया। जब आर्यसमाज महर्षि दयानन्द के बताए हुए वैदिक सिद्धान्तों को अपनाएगा तो हिन्दू जाति को बर्बाद होने से बचाने में सफलता प्राप्त होगी। आर्यसमाज की उन्नति भी सम्भव होगी।

आज स्वार्थी राजनेताओं की राजनीति है 'खाओ पीओ राजनेताओं की जेब में वोट भरो'। यही हालात आर्यसमाजों में भी राजनेताओं के पिछलग्गुओं ने पैदा कर दिए हैं। इसी कारण आज आर्यसमाज के नेताओं ने आर्यसमाज का सेवक न बनकर नेता बनते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखा है कि आर्यसमाज को सेवकों की आवश्यकता है नेताओं की आवश्यकता नहीं। अत: मेरी आर्यसमाज के सभी अधिकारियों से प्रार्थना है कि राजनेताओं के पिछलग्गू मत बनो। राजनेताओं से मत डरो। जो आदमी राजनेताओं से न डरकर परमात्मा से डरेगा तभी धर्मात्मा होगा अन्यथा नहीं। परमात्मा से डरना सत्य पर चलना है। आर्यसमाज ही हिन्दू जाति का संरक्षक है अत: मेरी सभी आर्यसमाज के नेताओं से प्रार्थना है कि राजनेताओं के पिछलग्गू मत बनो दयानन्द के सेवक बनो तभी पूरे भारत को बुराइयों से बचाया जा सकता है। किसी कवि ने निम्न ज्ञानज्योति का भजन लिखा है-

ज्ञान ज्योति

ज्ञान ज्योति को सदा मन में जगाना सीख लें।
सत्यमय जगदीश से प्रीति लगाना सीख लें॥
चाहते हैं विश्व में गर कीर्ति फैली रहे।
सद्गुणों को अपने जीवन में सजाना सीख लें॥
मन्द कर्मों को तजें और दूर पापों से रहें।
वेद के अनुसार जीवन को बनाना सीख लें॥
काम क्रोध और लोभ से भी लाभ उठा सकते हैं हम।
इनसे गर उचित जो है उपयोग लाना सीख लें॥
कामना में धर्म जाति देश की सेवा करें।
भावना में स्वार्थ सिद्ध की हटाना सीख लें॥
वेद के प्रकाश से प्रकाश लें, आगे बढ़ें।
ओ३म् के शुभ नाम को जपना-जपाना सीख लें॥
गलती से कोई कदम आगे बढ़ाया हो यदि।
बुद्धिमत्ता है यही पीछे हटाना सीख लें॥
क्यों भटकते दर-बदर 'सेवक' तु उसकी खोज में।
अपना प्रीतम अपने हृदय में बसाना सीख लें॥

जो उत्तम कार्य हों, वह आज ही कर डालो, कही ऐसा न हो कि काल तुम्हें निगल जाए। मृत्यु इस बात की प्रतीक्षा नहीं करती कि तुमने कोई कार्य पूरा किया है या नहीं?

लाभ क्या है-श्रेष्ठ पुरुषों का संग। दु:ख क्या है-मूर्खों का संग। हानि क्या है-समय की बर्बादी या अवसर को खो देना। चतुराई क्या है-धर्म के रहस्यों में लगे रहना। वीर कौन है-इन्द्रियों का विजेता। उत्तम स्त्री कौन है-पति की आज्ञा के अनुकूल चलने वाली। धन क्या है-विद्या-विद्या बिना आचरण के बजाय सुख के दु:ख का कारण होती है। सुख क्या है-विदेश में न रहना।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में उमड़ा जनसैलाब

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य सभा की उपलब्धियों व कार्यवृतांत को आर्यजनों के बीच रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में सभा मंत्री श्री उमेद सिंह शर्मा अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में स्वामी देवव्रत सरस्वती को तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव विद्वत् सम्मान से सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य आर्य नरेश को तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव विद्वत् सम्मान से सम्मानित करते हुए सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सत्यजित् जी व आचार्य सर्वमित्र जी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सत्यजित् जी का सम्मान करते हुए सभा प्रधान।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में मुख्य यज्ञमान यज्ञ करते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में दान स्थल का चित्र।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में सभा का पुस्तक स्टॉल।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री राजेश जैन एल.पी.एस. बोसार्ड का सम्मान करते राज्यपाल हि. प्र., राज्यपाल हरियाणा व सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री राजबीर सिंह वी.सी. एम. डी. यू. रोहतक का सम्मान करते सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य सत्यजित् जी का सम्मान करते सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महामंत्री श्री प्रकाश आर्य का सम्मान करते सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री कन्हैयालाल जी सभा उपप्रधान का सम्मान करते सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में स्वामी विदेह योगी का सम्मान करते सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में दिल्ली सभा मंत्री श्री विनय आर्य का सम्मान करते सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में परोपकारिणी सभा श्री वेदपाल आर्य का सम्मान करते सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य सोमदेव जी का सम्मान करते सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में अपने मधुर भजन प्रस्तुत करते हुए भजनोपदेशक उपेन्द्र।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में स्वामी सोमानन्द जी का सम्मान करते सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में स्वामी सोमानन्द जी अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में अपने मधुर भजन प्रस्तुत करते हुए सभा कोषाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा आर्या।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महामहिम राज्यपाल हि. प्र. आचार्य देवव्रत जी से विचार विमर्श करते सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में अपने दल के साथ सभा कोषाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा आर्या।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में अपनी उपस्थिति देता गुरुकुल कुरुक्षेत्र का दल।

बलिदान दिवस वसन्त पंचमी पर विशेष...

धर्म शहीद वीर बालक हकीकत राय

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, मो० 9813845774

आर्यावर्त्त (भारतवर्ष) वीर शहीदों, धर्मात्माओं, ऋषियों, मुनियों की पुण्यभूमि है। समय-समय पर भारत के वीर शहीदों ने देश, धर्म, जाति की रक्षा में हंसते हुए अपना जीवन भेंट चढ़ाया है। उन्हीं वीर शहीदों की प्रथम पंक्ति में धर्म शहीद बालक हकीकतराय का नाम आता है, जिसने पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में धर्म रक्षा में अपने प्राण न्यौछावर कर संसार को चकित कर दिया था। आइए उसी वीर बालक के महान् त्याग एवं बलिदान की गाथा पढ़ें।

पूर्व पंजाब (पाकिस्तान) के स्यालकोट नामक नगर में महाजन भागमल एवं उसकी पत्नी कौरा देवी रहते थे। सन् 1719 ईस्वी में उनके घर एक पुत्र रत्न जन्मा। उसका नाम हकीकतराय रखा गया। परिवार धन-धान्य से भरपूर था, फलत: हकीकतराय का पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से हुआ। वह कुशाग्र बुद्धि था, सब उसे घर में प्यार करते थे। महाजन भागमल तथा श्रीमती कौरा देवी उसे रामायण, महाभारत की कथाएं सुनाया करते थे। उनकी धर्म परायणता का बालक हकीकतराय पर भारी प्रभाव पड़ा।

आठ वर्ष की आयु में बालक हकीकतराय ने पढ़ाई शुरू की। मेधा बुद्धि होने से वह एक बार में समझाने से ही पाठ याद कर लेता था। मौलवी (अध्यापक) उस पर बेहद प्यार करता था, इसलिए मुसलमान बालक उससे ईर्ष्या-द्वेष करते थे।

एक दिन मौलवी साहब किसी कार्यवश पाठशाला से कुछ समय के लिए बाहर चले गए तथा जाते समय हकीकत राय को उन्होंने कक्षा संभालने का आदेश दिया। उनके चले जाने पर मुसलमान बच्चों को उसने शोर-शराबा करने से रोका तो उन्होंने उसकी भारी पिटाई की। मौलवी साहब के आने पर हकीकत राय ने सारी बात उन्हें बता दी। मौलवी साहब ने मुसलमान बच्चों की अच्छी तरह धुनाई की तथा हकीकतराय को पुचकार कर छाती से लगाया। इससे मुसलमान बालकों ने नाराज होकर हकीकतराय पर बीबी फातमा को गाली देने का आरोप लगाकर मौलवी की शिकायत अपने माता-पिता और नगर के काजी से कर दी। उन दिनों काजियों का बोलबाला था। उन्होंने फतवा जारी कर दिया कि या तो हकीकतराय मुसलमान बने या उसका सिर काट लिया जाए। महाजन भागमल, कौरा देवी, अन्य गणमान्य हिन्दुओं ने काजी से प्रार्थना की कि छोटे से बालक को क्षमा कर दिया जाये। उनकी प्रार्थना किसी ने नहीं सुनी तथा मुख्य काजी ने भागमल, कौरा देवी को लात मार-मार कर भगा दिया।

कुछ हिन्दुओं ने नगर के हाकिम अमीर बेग के पास जाकर सारी घटना सुनाई। नगा हाकिम एक शरीफ आदमी था। उसने काजियों को बुलाकर समझाया कि यह छोटे-छोटे बच्चों का झगड़ा है, उसे खत्म करने में ही सबकी भलाई है। उसके समझाने पर भी वे न माने और अमीर बेग पर भी रिश्वत लेने का आरोप लगा दिया। उसने भी विवश होकर मामला नवाब लाहौर को भेज दिया।

लाहौर के नवाब को कोई पुत्र नहीं था, केवल उसकी एक पुत्री थी जिसका नाम नूरा था। उसने बालक हकीकतराय की सुन्दर भोली सूरत तथा छोटी उम्र देखी और सारे मामले को सुना तो दंग रह गया कि अब क्या किया जाए। अचानक उसने हकीकत राय से कहा-बेटा, हकीकतराय, मैं तेरी सुन्दर भोली सूरत पर पूरी तरह कुर्बान हूँ। तू मेरी एक बात मान ले तू मुसलमान बन जा, तेरी जान बच जाएगी। मैं अपनी खूबसूरत बेटी नूरा का तेरे साथ निकाह कर दूंगा। मेरी सारी जायदाद (सम्पत्ति) का तू मालिक बन जाएगा। हकीकत राय ने नवाब का यह फैसला सुनकर उत्तर दिया-

नवाब साहब, बात आपकी, मुझे न तनिक सुहाती है।
सच कहता हूँ, अक्ल आपकी, मुझको यह दर्शाती है।
जो जग को रचने वाला है, जो सर्वविश्व का है स्वामी।
तुम जगदीश्वर को भूल गये, जो सच्चा न्यायकारी नामी।

यदि मुसलमान बन जाऊँ मैं, क्या मौत मुझे 'ना' आएगी?
वह शक्ति कौन-सी है जग में, जो तुमको सदा बचाएगी?

बालक हकीकत राय का उत्तर सुनकर नवाब दंग रह गया और सिर नीचा करके बोला, ''बेटा, संसार में प्रत्येक व्यक्ति को मौत आती है। मौत के पंजे से कोई भी नहीं बचा है और न बचेगा।'' नवाब की यह बातें सुनकर वीर हकीकतराय ने गर्जते हुए कहा-

मरना है सबको एक रोज, तो फिर क्यों धर्म डुबाऊँ मैं?
गोरक्षक से गोभक्षक बन, फिर पापी, क्यों कहलाऊँ मैं?
मैं राम-कृष्ण का वंशज हूँ, मैं वैदिक धर्म निभाऊँगा।
मेरी तो मौत सहेली है, मैं उसको गले लगाऊँगा॥
है अमर आत्मा, याद रखो, न मारे से मर सकती है।
ईश्वर कर्मों का फल देता है, न पेश किसी की चलती है॥
मैं जन्म दोबारा धारूँगा, दोबारा जग में आऊँगा।
फिर तुम जैसे हत्यारों से, निर्भय होकर टकराऊँगा॥

नवाब नेजब हकीकत राय की यह सिंग-गर्जना सुनी, वह क्रोध के मारे लाल-पीला हो गया। उसने उसी क्षण जल्लाद को बुलवाया और हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दिया। यह देखकर सारे दरबार में सन्नाटा छा गया। किसी में कुछ कहने की हिम्मत नहीं थी। भागमल, कौरा देवी और रिश्तेदार रो रहे थे। हकीकत राय की चौदह वर्ष की आयु में बटाला की लक्ष्मी देवी से शादी हो गई थी। वह बेचारी बटाला में बिलख रही थी। हिन्दू जनता भयभीत थी, यह था आपसी फूट का भयंकर परिणाम।

यह सन् 1734 ईस्वी की घटना है। सारे देश में वसंत पंचमी का महापर्व मनाया जा रहा था और लाहौर में घोर अत्याचार हो रहा था। बालक हकीकत राय को वध-स्थल पर ले जाया गया। जल्लाद ने जब हकीकत राय को देखा तो उसका पत्थर दिल भी पिघल गया और तलवार हाथ से नीचे गिर गई। यह देखकर हकीकत राय बोला-

जल्लाद दया करके भाई, अब बात मान ले तू मेरी।
तू तो अब अपना फर्ज निभा, क्यों करता है वृथा देरी॥
यदि मुझसे मोह करेगा अब, तू नाहक मारा जाएगा।
तेरे भी बालक रोयेंगे, सारा कुनबा दुःख पाएगा॥
मत बाधा बन तेरे पथ में, तू जल्दी कर, तू जल्दी कर।
मुझ को तू धर्म निभाने दे, मेरे हृदय की पीड़ा हर॥

जल्लाद ने हकीकत राय की बात मानकर तलवार हाथ में ली और दिल मजबूत कर वीर हकीकत राय की गर्दन पर तलवार का भरपूर वार किया। हकीकत राय का सिर कटकर एक ओर धरती पर गिर गया। कहते हैं वह उस समय हंस रहा था। धन्य था बालक हकीकत राय। वह धर्म रक्षा में अपना सिर कटवा कर भारतमाता का सिर संसार में ऊँचा कर गया। जब तक सूरज, चांद, सितारे पृथ्वी पर रहेंगे, वीर हकीकत राय का नाम भी अमर रहेगा और भारत वीरों को धर्मरक्षा में बलिदान होने की प्रेरणा देता रहेगा।

सज्जनो! कुछ व्यक्ति कहते हैं कि उस समय मुगल बादशाह शाहजहाँ का शासन था तब उसने नवाब और काजियों को मृत्युदण्ड दिया था, किन्तु यह विचार निराधार है, क्योंकि हकीकत राय का बलिदान सन् 1734 ईस्वी में वसन्त पंचमी के दिन हुआ था और उस समय मोहम्मद शाह रंगीला का शासन था। औरंगजेब की मृत्यु सन् 1707 ईस्वी में हो चुकी थी तथा शाहजहाँ की मौत तो औरंगजेब की जेल में ही हो गई थी। वास्तव में यह मुसलमानों की हिन्दुओं को मूर्ख बनाने की सोची-समझी चाल है। हमें इससे सावधान रहना चाहिये। अन्त में प्रभु से प्रार्थना है-

हे जगत्पिता हे जगदीश्वर! अब आर्यावर्त पर दया करो।
दो सुमति भारतीय वीरों को, अज्ञान अविद्या नाथ हरो॥
जिससे यह देवों का भारत, सिरमौर जगत् का बन जाए।
भूखा-नंगा अरु दीन-दुःखी, भारत में नज़र नहीं आए॥

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा)

प्रभु तेरी प्रीति का, प्यार है निराला।
हर पल पिया करूँ, तेरे प्यार का ही प्याला।
पिया करो प्यार प्यारे, वो निराला कर देगा।
सबके दिल में बैठा दाता, वो उजाला कर देगा।
भूल का है लगा हुआ, सबके दिल में ताला।
न्याय से जो काम करे, वो इंसान होते हैं।
ज्ञान को बताने वाले, वो महान् होते हैं।
वेदों का जो ज्ञान देकर, कर दे उजाला।
राम-कृष्ण पैदा हुए, जग में निराले थे।
पूजती है दुनिया सारी, प्रजा के रखवाले थे।
हनुमान सेवक मिल्या, राम को निराला।
पावन जीवन से ही, दाता जल्दी प्रसन्न होते हैं।
शुद्धि के हो जाने से ही, पल में दर्शन होते हैं।
प्रभु दर्शन करने वाला, आर्य मानव है निराला।
-रामकुमार आर्य, अध्यक्ष, वेदप्रचार मण्डल, हिसार

मनुष्य और जीवात्मा

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

मनुष्य दो पैर वाले प्राणी के जीवित शरीर को कहते हैं जिसके पास बुद्धि है, दो हाथ हैं, जो सोच-विचार कर सत्य व असत्य का निर्णय कर सकता है और जो ज्ञान व विज्ञान की उन्नति कर अपने जीवन को दुःखों से निवृत्त कर सुखों से युक्त कर सकता है। इसी प्रकार आत्मा व जीवात्मा मनुष्य के शरीर के भीतर उपस्थित एक चेतन सत्ता को कहते हैं जो सत्य है, अल्प ज्ञान व कर्म करने की शक्ति से युक्त है। कर्म करने व सुख प्राप्ति के लिये जीवात्मा को मनुष्य अथवा अन्य किसी प्राणी के शरीर की आवश्यकता होती है। जीवात्मा इस ब्रह्माण्ड में संख्या की दृष्टि से अगण्य वा अनन्त हैं। हम संसार में जितने भी मनुष्य व अन्य चेतन प्राणियों को देखते हैं वह सब अपने शरीरों में एक जीवात्मा से युक्त हैं। यह जीवात्मा अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अविनाशी, अमर, अजर, ससीम, जन्म व मरण धर्मा, कर्मों का कर्ता और उसके फलों का भोक्ता है। यह अनादि व अनन्त है अर्थात् इसका आरम्भ व अन्त नहीं है। यह भी जानने योग्य है कि मनुष्य योनि उभय योनि है जिसमें मनुष्य पूर्व कृत कर्मों के फल भोगता है और नये कर्म करता भी है। अन्य प्राणी योनियां केवल भोग योनियां हैं जिसमें उन प्राणियों की आत्मायें अपने-अपने पूर्वजन्मों में किये गये पाप व पुण्य कर्मों का फल भोगती हैं। यह भी जानने योग्य है कि मनुष्य या किसी भी प्राणी को जो सुख व दुःख होते हैं वह उसके शरीर को नहीं अपितु उसकी आत्मा को ही होते हैं। यह सुख दुःख उन्हें ईश्वर की व्यवस्था से प्राप्त होते हैं। ईश्वर सभी जीवात्माओं के भूतकाल की सभी योनियों के जीवन व कर्मों का साक्षी है। वह अनन्त बल से युक्त है और पक्षपात से रहित तथा न्यायकारी है। इसी कारण वह जीवों को पूर्व जन्मों के कर्मों का फल देता है। कोई कर्म ऐसा नहीं है जिसका फल ईश्वर की व्यवस्था से न मिलता हो। हम जो भी शुभ व अशुभ कर्म करते हैं उन सब कर्मों का फल हमें जन्म-जन्मान्तरों में अवश्य ही भोगना पड़ता है। जीवों के कर्मों के फल देने के लिये ही ईश्वर सत्, रज व तम गुणों वाली प्रकृति से इस दृश्यमान जगत की रचना करने सहित सबका पालन भी करता है। इस सृष्टि में ईश्वर का अपना सुख व यश प्राप्ति आदि का कोई प्रयोजन नहीं है। वह सदैव सृष्टिकाल वा प्रलयकाल दोनों में आनन्द से युक्त रहता है। ईश्वर का आनन्द उन योगी व ऋषियों को भी प्राप्त होता है जो ईश्वर की उपासना, ध्यान व समाधि आदि का सेवन करते हैं। ऋषि व योगी वही होते व हो सकते हैं जो वेदों के ज्ञानी हों व सद्कर्मों को करने वाले होते हैं। वेदानुकूल कर्म करना ही मनुष्य का कर्त्तव्य है और असत् व वेदविरुद्ध कर्मों का त्याग ही मनुष्य का धर्म है। इसलिये धर्म का कोई विशेषण हो सकता है तो वह केवल वेद या वैदिक ही हो सकता है क्योंकि वेद की पुस्तकों में ही मनुष्य के सत्य व यथार्थ कर्तव्यों का विधान है।

जीवात्मा अपने स्वतन्त्र व मौलिक अस्तित्व जो शरीर रहित होता है, उसमें सुख व दुःख का अनुभव नहीं कर सकता। इसके लिये उसे सबसे श्रेष्ठ मनुष्य योनि में जन्म लेकर स्वस्थ शरीर रखते हुए ज्ञान प्राप्ति सहित पुरुषार्थ से संयुक्त होना होता है। इस कार्य में परमात्मा उसका सहायक होता है। परमात्मा सृष्टि की उत्पत्ति, इसका पालन तथा प्रलय करने के साथ जीवात्मा को उनके पूर्वजन्मों के कर्मों के अनुसार जन्म देने व सुख व दुःख का भोग कराने में पूर्णतः समर्थ है। यह भी ज्ञातव्य है कि परमात्मा व जीव का सम्बन्ध एक ओर जहां व्याप्य व व्यापक का है वहीं दूसरी ओर यह सम्बन्ध पिता-पुत्र का भी है। जीवात्मा के जन्म लेने के बाद अन्य माता-पिता, भाई-बहिन, दादी-दादा व नानी-नाना, धर्मपत्नी सहित मित्र व शत्रुओं आदि से जो सम्बन्ध होते हैं वह अस्थाई होते हैं। जन्म के समय सम्बन्ध बनता है और मृत्यु होने पर यह सम्बन्ध समाप्त हो जाता है। परमात्मा और हमारी जीवात्मा का सम्बन्ध अनादि काल से है और अनन्त काल तक रहेगा। इसलिये हमें ईश्वर की अवज्ञा नहीं करनी है। यदि करेंगे तो उसका दुःख रूपी फल हमें भोगना होगा। हमारे ऋषि, मुनि, विद्वान व योगी सब वेदों के विद्वान होते थे और वेदानुकूल जीवन के महत्व से भली भांति परिचित होते थे। इसी कारण वह पाप, भोग तथा सुखों आदि से दूर रहकर ईश्वर की उपासना, ज्ञानार्जन, अग्निहोत्र-यज्ञ, परोपकार के कर्म तथा मातृ-पितृ-आचार्यों आदि की सेवा व पूजा आदि में अपना समय व्यतीत करते थे। यह सभी देशभक्त और वैदिक धर्म के अनुयायी होते थे और सरलता व सादगी से जीवन व्यतीत करते थे। यही मनुष्यता के आदर्श थे व हो सकते हैं। हमें इन्हीं व राम, कृष्ण, चाणक्य, दयानन्द, श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त तथा महात्मा हंसराज आदि के जीवन से प्रेरणा लेकर स्वयं को उनके अनुरूप बनाना है। इसी से हमारे जीवन का कल्याण हो सकता है।

परमात्मा ने मनुष्य की आवश्यकतायें बहुत सीमित बनाई है। इसके जीवन निर्वाह के लिये भोजन चाहिये जिसके लिये शाकाहारी भोजन जिसमें अन्न, वनस्पतियां, ओषधियां, गोदुग्ध, फल आदि की मुख्यत: आवश्यकता होती है। मनुष्य जीवन के लिये वायु एवं जल की भी आवश्यकता होती है। यह ईश्वर ने प्रचुर मात्रा में हमें दिया है। मनुष्य को कुछ वस्त्रों की आवश्यकता होती है जिसे उपलब्ध कराया जा सकता है। एक घर की भी आवश्यकता होती है जिसके लिये परमात्मा ने विशाल भूमि बनाई है और भवन निर्माण की नाना प्रकार की सामग्री भी दी है। अत: हमें त्यागपूर्वक इन सब पदार्थों व सामग्री का उपयोग करना चाहिये। हमारी भावना अपरिग्रह की होनी चाहिये। वेद में सृष्टि के सभी पदार्थों का भोग त्याग पूर्वक करने की प्रेरणा की गई है। यदि हम परिग्रही बनेंगे तो हमें ईश्वर से दण्ड मिलेगा। इस दण्ड व दु:ख से बचने के लिये और ईश्वर की साधना में सफलता प्राप्त करने के लिये हमें सभी यम व नियमों सहित अपरिग्रह पर भी विशेष ध्यान देना चाहिये। हम कई लोगों को देखते हैं जो वृद्धावस्था में हैं, उनके पास प्रचुर मात्रा में धन है, आय के अनेक स्रोत व पेंशन आदि भी हैं परन्तु फिर भी वह वृद्धावस्था में भी धनोपार्जन में लगे रहते हैं। अग्निहोत्र यज्ञ से भी अपरिचित हैं व इसे करना वह उचित नहीं समझते। ऐसे लोगों के विषय में तो यही लगता है कि वह मनुष्य हैं तो अवश्य परन्तु उनका जीवन ईश्वर की वेदाज्ञा के अनुकूल न होने से पूर्ण इस जन्म में सुखदायक व कल्याणकारी और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म में अधिक सुखों की स्थिति से युक्त होने की सम्भावना नहीं है। हमें ईश्वरोपासना, वेदों व ऋषियों के ग्रन्थों के स्वाध्याय सहित अग्निहोत्र व परोपकार आदि श्रेष्ठ कर्मों को करते हुए वेदानुकूल जीवन ही व्यतीत करना चाहिये। वही सबसे अधिक प्रशस्त है।

मनुष्य भले ही धनोपार्जन व धनसंग्रह सहित सुखोपभोग की कितनी भी सामग्री एकत्र कर ले, यदि वह ईश्वर और जीवात्मा को जानने के लिये स्वाध्याय नहीं करेगा तो उसे अपने कर्तव्यों का भलीभांति ज्ञान नहीं हो सकता। विद्वानों के उपदेशों से भी हमें अनेक लाभ होते हैं। इससे हमारे संस्कार भी बनते हैं और कर्तव्यों का बोध होता है। ध्यान आदि साधना हमें अवश्य करनी है इसी से इस जीवन तथा परजन्म में हमें सुख लाभ होगा। अत: हमें जीवात्मा को जानकर तथा मनुष्य जीवन के लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को भी जानना व समझना है। इसी से हमारा कल्याण होगा और जीवन सफल होगा।

मनुष्य को क्या करना है और क्या नहीं, इसका ज्ञान परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों को वेद ज्ञान देकर कराया था। हमारे ऋषियों व विद्वानों ने सृष्टि के अनादि काल से अब तक वेदों को पूर्ण शुद्ध रूप में सुरक्षित रखा है। हमारा सौभाग्य है कि ऋषि दयानन्द के प्रशनीय प्रयत्नों से हमें वेदों का ज्ञान अपने यथार्थ व सत्य अर्थों सहित प्राप्त हैं। सत्यार्थप्रकाश उनका प्रतिनिधि ग्रन्थ है। हमें इसका व उनके अन्य ग्रन्थों का स्वाध्याय कर वेदानुकूल जीवन व्यतीत करना है। सृष्टि में वेद ही यथार्थ मनुष्य धर्म का एकमात्र ग्रन्थ है। अन्य सभी ग्रन्थ अविद्या व मिथ्या मान्यताओं व परम्पराओं का विधान करते हैं। इन मत-मतान्तरों के कारण ही संसार में एक मत दूसरे मत के अनुयायियों के शत्रु बने हुए हैं। इससे अनुमान होता है कि जब तक सभी मत अविद्या को छोड़कर अविद्या व सद्ज्ञान का आश्रय नहीं लेंगे और अविद्या को नहीं छोड़ेंगे तब तक विश्व में पूर्ण सुख व शान्ति अर्थात् कल्याण की स्थापना नहीं हो सकती। ऋषि दयानन्द ने वेदों का प्रचार तथा सत्यार्थप्रकाश आदि वैदिक ग्रन्थों की रचना इसी कारण से की थी। मनुष्य को अपनी जीवात्मा के स्वरूप को पहचान कर व अपने कर्तव्यों को जानकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील होना है। वैदिक मान्यताओं का ज्ञान व जीवन के उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़कर समझे जा सकते हैं। वेदाचरण से इतर अन्य कोई मार्ग जीवन के कल्याण करने का नहीं है। वेदों का अध्ययन व उसके अनुसार कर्म ही मनुष्य को करने आवश्यक हैं। इसी से वह सुख, आनन्द व कल्याण को प्राप्त कर सकता है।

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बद्ध सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि वे अपनी आर्यसमाज का गत वर्ष 2016-2017, 2017-2018 व 2018-2019 का वेदप्रचार, दशांश एवं 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका का शुल्क बैंक ड्राफ्ट अथवा चैक द्वारा 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' के नाम से भेजें। हरयाणा सोसायटी एक्ट 2012 के अनुसार नकद राशि स्वीकार नहीं की जाएगी।

-सभामन्त्री

ऋषि की फटकार, शिक्षा व दया

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

अथर्ववेद कहता है कि परमात्मा की सृष्टि में ज्ञानी लोग बाण के समान हैं। ज्ञानी लोगों के भी ज्ञान का यही औचित्य है कि उससे श्रेष्ठों की रक्षा हो तथा दुष्टों का ताड़न हो। इसी प्रकार सत्य की स्थापना होकर सुख की स्थापना हो सकती है। इस प्रकार की क्रिया युक्त ज्ञानियों में भी जो बढ़कर होता है, वही ऋषि होता है। दयानन्द ऐसे ही ऋषि थे, बल्कि यूं कहें कि विशेष परिस्थितियों से जूझने के कारण विरले ऋषि थे।

आर्यों की सन्तानों का स्वाभिमान जिस समय अंग्रेजों के पदाक्रान्त हो रहा था, ऐसे समय में ईसाइयों को ऋषि की फटकार दर्शनीय है। यह फटकार राष्ट्रभक्ति और सार्वभौमिक सुख सम्पादन के निमित्त वैदिक धर्म के उद्धार की मिली-जुली भावना से अद्भुत हुई है। हमारे राष्ट्र में रहते हुए ईसाई लोग हमारे स्थान विशेष पर आते हुए जूते नहीं उतारते थे। ऋषि जी ने उन्हें इस संदर्भ में बाइबिल का प्रमाण देते हुए सचेत करते हैं। जूते के स्थान पर ईसाइयों द्वारा टोपी उतारने की परम्परा पर ऋषि उनकी खबर लेते हुए कहते हैं कि उतारने योग्य को उतारने नहीं, जो नहीं उतारना चाहिए उसको उतारते हो, दोनों प्रकार अपने पुस्तक (बाइबिल) से विरुद्ध करते हो। यहाँ ईसाई लोग जब यह बहाना बनाते हैं कि "हमारे यूरोप में शीत अधिक है इसलिये हम लोग जूती नहीं उतारते।"

यहाँ ऋषि का यह फटकार उपर्युक्त संदर्भ में अवलोकनीय है। ऋषि कहते हैं, "क्या शिर में शीत नहीं लगता? जो यही है तो यूरोप देश में जाओ तब ऐसा ही करना। परन्तु जब हमारे घर में वा बिछौने में आया करो तब तो जूती उतार दिया करो और जो न उतारोगे तो तुम अपने बाइबिल पुस्तक से विरुद्ध चलते हो, ऐसा तुमको न करना चाहिए।"

आर्य से हिन्दू बने देशवासियों की बुतपरस्ती पर विदेशियों के हास्य-व्यंग्य को सत्य के आइने में दिखाकर उन्हें उनकी औकात दिखाने का कार्य ऋषि ने किया। 'तौरेत' में खम्भे में ईश्वर के घर विषय प्रसंग पर ऋषि कहते हैं-"वाह-वाह जी! क्या कहना है ईसाई लोगो! महाबुतत्परस्त तो तुम्हीं हो।"

आज इतिहास की पुस्तकों में यह तथ्य पढ़ाया जाता है कि औपनिवेशिक शासक अपने शासन को स्थिर करने के लिए सुधार के नाम पर शासित क्षेत्र की भाषा, संस्कृति, परम्परा के स्थान पर स्वयं की भाषा, संस्कृति व परम्परा का प्रचार करते थे। आश्चर्य की बात कि आज हमारे बालक जिस विषय को पढ़ रहे हैं, उस विषय को उस समय के हमारे सुप्रसिद्ध सामाजिक, धार्मिक नेता समझकर भी नहीं समझ सके। यह इसीलिए हुआ कि वहाँ ऋषि तुल्य तप नहीं था और न ही वह ज्ञान था। ऋषि जैसी लोकैषणा का त्याग होता तो उन्हीं के समान समीक्षा सत्य पर आधारित होती। जिन्हें ये नेता सभ्य मानकर हमें मानसिक गुलाम बनाते रहे, उनके विषय में एक प्रसंग में ऋषि की समीक्षा देखिए-"जिनका ईश्वर बछड़े का मांस खावे उसके उपासक गाय, बछड़े आदि पशुओं को क्यों छोड़ें? ....इससे विदित होता है कि जंगली मनुष्यों की एक मण्डली थी। उनका जो प्रधान मनुष्य था उसका नाम बाइबिल में ईश्वर रक्खा होगा।"

'ईञ्जील' में कबरस्थान से मरे हुए मनुष्यों के निकल आने के प्रसंग पर कहते हैं, "जो कि महाजंगली है वे ऐसी बातों पर विश्वास लाते हैं।" वेदों को गडरियों के गीत बताने वालों की स्वयं की मूल मान्यता की समीक्षा कर ऋषि उन्हें जंगली, महाजंगली सिद्ध करते हैं और वह भी कैसे समय में, किन परिस्थितियों में? पाठकगण! तनिक विचार कीजिए।

ज्ञान-विज्ञान का दम्भ भरने वाले ईसाई जो चौथे आसमान की बात करते हैं, उन्हें शिक्षा देते हुए ऋषि कहते हैं कि "जो आकाश को स्वर्ग कहा तो वह सर्वव्यापक है इसलिये सर्वत्र स्वर्ग हुआ फिर ऊपर को स्वर्ग है यह कहना व्यर्थ है।" इस विषय में ईसाइयों को सभ्य बनाने के लिए ऋषि शिक्षा देते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापक, अनन्त गुण-कर्म-स्वभाव युक्त सच्चिदानन्दस्वरूप, नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभाव, अनादि, अनन्तादि लक्षणयुक्त वेदों में कहा है। उसी को मानो तभी तुम्हारा कल्याण होगा, अन्यथा नहीं।

यीशु पर विश्वास लाकर पाप क्षमा करवाने के लिए ईसाइयों के दावे पर ऋषि कहते हैं कि जो पाप क्षमा करने

की बात है वह केवल भोले लोगों को प्रलोभन देकर फंसना है। जैसे दूसरे के पिये मद्य, भांग, अफीम खाये का नशा दूसरे को प्राप्त नहीं हो सकता वैसे ही किसी का किया हुआ पाप किसी के पास नहीं जाता किन्तु जो करता है वही भोगता है, यही ईश्वर का न्याय है। आर्यसमाज के उपदेशक इस ऋषि तर्क को अपना सकते हैं। इस संदर्भ में वे जो अन्य उदाहरण देते हैं, यह उंदाहरण भी पाखण्डियों के लिए अकाट्य होगा।

ऋषि का विरोध केवल असत्य से है। सत्यरूपी न्याय ही उनकी दया है। प्राणिमात्र के प्रति उनका हृदय दया से भरा है और वे 'दयानन्द' नाम को सार्थक करते हैं। यहाँ भी दया के इस सागर में दया की एक लहर उत्पन्न होती है और उद्गार निकलता है, ''ईसा का उस प्रकार का अपराध नहीं था जैसा उसके विषय में उन्होंने किया....यदि ईसा झूठ-मूठ ईश्वर का बेटा न बनता और वे उसके साथ ऐसी बुराई न वर्तते तो दोनों के लिए उत्तम काम था....सर्वथा यीशु के साथ उन दुष्टों ने बुरा काम किया। परन्तु यीशु का भी दोष है।'' ईसाई लोग यदि सत्यार्थप्रकाश के तेरहवें समुल्लास की समीक्षा को मान लें तो निःस्वार्थ भाव से स्वयं सभ्य बनकर मनुष्य समाज को सभ्य बनाने में अपना योगदान दे सकते हैं। लेकिन ऋषि का सम्मानकरने वाले उच्च बौद्धिक स्तर के पुजारियों की भांति, पादरियों के आड़े भी स्वार्थ आ गया और वे ऋषि के साथ न चल सके, मनुष्य जाति का बड़ा कल्याण होते-होते रुक गया।

अभी आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन मनाया गया। जिस दिन से पूज्य आचार्य बलदेव जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को संभाला था उसी दिन से उनके साथ पूरे समर्पण से आर्यसमाज का प्रचार निरन्तरता से उनके नेतृत्व में किया। अपना यह लेख उनकी स्मृति में भेंट करता हूँ। ऐसे अनेक लेखों पर वे उत्साह बढ़ाते थे। वर्षों पहले मैंने एक लेख 'सत्यार्थप्रकाश के चुनिन्दा मोती' लिखा तो मिलने पर कहने लगे, ''लेख पढ़कर सोच रहा था कि....।''

पाठगगण! आज पिछड़ा वर्ग के भाइयों में ईसाई मिशनरी घुसे हुए हैं। गोहाना (सोनीपत) में एक बेरोजगार, शरीर से दुबले लेकिन संकल्प के फौलादी युवक विकास आर्यवीर ने भाइयों की रक्षा का अभियान छेड़ा है। ऐसे युवकों की मदद करनी चाहिए।

रक्तदान का गीत तर्ज-सदके जावां....

टेक-जो करै रक्त का दान,
देश में ऊँची उसकी शान,
करो सब जनसेवा।

1. जो करते दीन-दुखी की सेवा,
उनको मिल जाती है मेवा,
पर-उपकार कमाते हैं-2
रक्तदान के करने वाले, दुःखियों के दुःख हरने वाले।
जीवन सफल बनाते हैं-2
यह कार्य बड़ा महान्, मिलै मानवता की पहचान,
करो सब जनसेवा।

2. यह देश हमारा भारत प्यारा, मिलकर स्वर्ग बनायेंगे।
हो फूट बीमारी से छुटकारा, आपस का हो भाईचारा।
सारे मौज उड़ायेंगे-2
हो ऐसे वीर जवान, देश की ऊँची कर शान।
करो सब जनसेवा।

3. होता देश महान् उनका, बल-बुद्धि और ज्ञान जिनका,
बज्जर-सा शरीर हो-2
कला-कौशल में हो भरपूर, विदेशों में भी दूर-दूर।
ऐसे शूरवीर हों-2
करै ओ३म् नाम गुणगान, हमारा चमकै हिन्दुस्तान।
करो सब जनसेवा।

4. किसी जगह ना मिले बीमारी, होवे खत्म कमजोरी सारी।
सब मैं छाज्या तन्दुरुस्ती-2
उठ सभी व्यायाम करेंगे, सारे प्राणायाम करेंगे।
मिल जायेगी फिर चुस्ती-2
सुनो वेदों के व्याख्यान, कहे रामेश्वर हो कल्याण।
करो सब जनसेवा।

-पं० रामेश्वर आर्य, भजनोपदेशक, प्रधान
आर्यसमाज उचाना मण्डी (जीन्द) 9416955090

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	वैदिकज्ञान योग महाविद्यालय गुरुकुल जूआ (सोनीपत)	16 से 17 फरवरी 19
2.	आर्यसमाज खरक कलाँ (भिवानी)	17 फरवरी 19
3	आर्यसमाज सफीदों जिला जीन्द	22 से 24 फरवरी 19
3	आर्यसमाज झज्जर शहर	23 से 24 फरवरी 19
4.	आर्यसमाज शेखपुरा खालसा (करनाल)	23 से 25फरवरी 19
5.	आर्यसमाज शादीपुर जुलाना, जिला जीन्द	24 फरवरी 19
6.	आर्यसमाज चरखी दादरी (चरखी दादरी)	2 से 4 मार्च 19
6.	आर्यसमाज आहुलाना (सोनीपत)	29 से 31 मार्च 19

-रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

कुछ शंकाओं का समाधान

❑ **खुशहालचन्द्र आर्य**, 180 महात्मागांधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-7

हम साधारण व्यक्ति संस्कृत के विद्वान् न होने से वेदों के मन्त्रों के सही अर्थ नहीं लगा सकते और न ही वेदों, उपनिषदों, दर्शनों, स्मृतियों व ब्राह्मणग्रन्थों को पढ़ सकते हैं, इसलिए

हम वैदिक सिद्धान्तों को सही ढंग से नहीं जान सकते। ऐसे में हमें महर्षि दयानन्दकृत ग्रन्थों के शरण में जाना पड़ेगा। महर्षि दयानन्द ने मानव जाति पर बड़े उपकार किये हैं, जिन्होंने पूरे वेद वाङ्मय का अपने ग्रन्थों में विस्तारपूर्वक सही अर्थों का वर्णन किया है, जिनको पढ़कर हम अपनी शंकाएं दूर कर सकते हैं और उनको पढ़कर अपने जीवन को सफल बना सकते हैं। वैसे तो महर्षि ने अनेक छोटी-बड़ी पुस्तकें लिखी हैं, जो सभी सारयुक्त हैं, जिनको पढ़कर मनुष्य पूर्ण ज्ञानवान बन सकता है। यदि कोई उनके सभी पुसतकें न भी पढ़ सके तो कम से उनके लिखे तीन महान ग्रन्थ जिनमें पहला अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, दूसरा संस्कारविधि, तीसरा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका है। इन तीनों ग्रन्थों को कोई ध्यानपूर्वक पढ़ लेवे तो वह एक अच्छा वैदिक विद्वान् बन सकता है और यदि इनमें लिखे विचारों को अपने जीवन में उतार लेवे और उन शिक्षाओं पर आचरण करे तो मनुष्य अपने जीवन को सुख व शान्ति से व्यतीत करते हुए वह हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। साथ ही मानव प्राप्ति का मुख्य उद्देश्य जिसके लिए जीव मनुष्य योनि में आता है, वह अपने परम लक्ष्य मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है।

यहाँ मैं महर्षि दयानन्दकृत उनके अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास 'वेदविषयं व्याख्या स्याम:' में उठाये कुछ प्रश्नों के उत्तर या समाधान महर्षि ने किया है, उनका उल्लेख कर रहा हूँ। पाठकों की ज्ञानवृद्धि के लिए प्रश्न व उत्तर इसी भांति हैं, जिनको मैंने अपनी सरल भाषा व शैली में लिखा है-

1. प्रश्न-जब ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, तो वह अपने भक्त के सभी कार्य क्यों नहीं कर सकते और अवतार धारण क्यों नहीं कर सकते?

उत्तर-महर्षि ने सर्वशक्तिमान् का अर्थ बताते हुए लिखते हैं कि सर्वशक्तिमान् का अर्थ यह नहीं होता कि वह सभी कार्य कर सकता है, अपितु सर्वशक्तिमान् का अर्थ होता है कि वह अपने कार्य सृष्टि को बनाना, पालन करना व संहार करना और जीव को उसके लिए अच्छे व बुरे कर्मों का यथावत् फल देना यानि जैसे उसने कर्म किये हैं, उनका फल दु:ख व सुख के रूप में इसी योनि में देना या मृत्यु के उपरान्त नई योनि के कर्मानुसार देना। इन कार्यों में ईश्वर किसी दूसरे का सहयोग नहीं लेता। सभी कार्य अपने सामर्थ्य से करता है। इसलिए ईश्वर सर्वशक्तिमान् कहलाता है। यदि ईश्वर अपने भक्तों की इच्छानुसार कार्य करे तो ईश्वर पराधीन बन जाता है और भक्त लोग अनेक हैं, ईश्वर कितने भक्तों का कार्य करेगा, सो यह केवल कल्पना है। यहाँ समझने की बात एक यह है कि ईश्वर स्वयं भी अपने नियमों व व्यवस्था में बंधा हुआ है, वह अपने नियमों व व्यवस्था को स्वयं भी नहीं तोड़ सकता। अब प्रश्न यह उठता है कि ईश्वर राम और कृष्ण के रूप में अवतार लेता है या नहीं? इसका उत्तर यह है कि ईश्वर के अवतार लेने से ईश्वर की शक्ति को बढ़ाया नहीं बल्कि घटाया जा रहा है। जो ईश्वर सारी सृष्टि को जिसमें करोड़ों सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी व तारे हैं, उनको यथावत् अपनी सुव्यवस्था के अनुसार सृष्टि को चार अरब बत्तीस करोड़ वर्षों तक चलाता है और इतनी ही अवधि तक प्रलय में व्यवस्थित रहता है। क्या वह रावण और कंस को अपनी स्थिति में रहते हुए ही नहीं मार सकता? यह एक हास्यप्रद-सी जान पड़ती है। इसलिए अवतार लेने की अवधारणा बिल्कुल गलत जान पड़ती है। हाँ! राम और कृष्ण एक महान् पुरुष थे, जिन्होंने समय की आवश्यकता को देखते हुए अपने महान् सामर्थ्य से अद्भुत कार्य किये इसलिए उनको ईश्वर के अवतार न कहकर उनको एक महान् पुरुष कहना उचित है।

2. प्रश्न-दया और न्याय भिन्न-भिन्न गुण हैं। जो न्याय करेगा वह दया नहीं कर सकता और जो दया करेगा वह न्याय नहीं कर सकता। कारण न्याय करने वाले को उसके किये हुए बुरे कर्मों के अनुसार उसे दण्ड देना पड़ेगा और दया करने से उसे दण्ड न देकर छोड़ना पड़ेगा, इसलिए वह दोनों गुण अलग-अलग हैं।

उत्तर-नहीं! यह दोनों एक समान हैं, केवल नाम का अन्तर है। बुरे काम वाले को दण्ड देना ही दया है, कारण दण्ड देने से वह सुधर जायेगा और दोबारा बुरा काम नहीं करेगा, जिससे उसका आगे का जीवन अच्छा बन जाएगा।

इसलिए जो न्याय से प्रयोजन सिद्ध होता है, वही दया से। दण्ड देने का प्रयोजन है कि मनुष्य अपराध करना छोड़ देवे, जिससे वह दु:खों को न प्राप्त हो, वही दया कहलाती है जो दूसरों को दु:खों से छुड़ाती है। दूसरी बात यह है कि किसी डाकू को दण्ड देकर जेल न भेजें तो वह कितने ही लोगों को दु:ख देगा इसलिए डाकू को दण्ड देने से ही दूसरों पर दया हो जाती है। डाकू के जेल जाने से वे सुखी हो जाते हैं। डाकू भी जेल से छूटने के बाद जेल के डर से आगे डाका नहीं डालेगा। इसलिए न्याय करने से डाकू के लिए भी दया हो गई और दूसरों के लिए भी दया हो गई। इसलिए न्याय करना ही उसके ऊपर दया है, इसलिए न्याय और दया में कोई भेद नहीं।

3. प्रश्न-जब हम ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करते हैं तो क्या ईश्वर हमारे पाप क्षमा कर देता है और यदि क्षमा नहीं करता तो फिर स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने से लाभ ही क्या?

उत्तर-नहीं! स्तुति, प्रार्थना व उपासना करने से मनुष्य को अन्य लाभ हैं। स्तुति से ईश्वर में प्रीति होती है और प्रीति होने से मनुष्य ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को देखकर अपने गुण, कर्म, स्वभाव को अच्छा बनाता है। यानि ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव नि:स्वार्थ भाव से परोपकार करना है, वह बिना कोई शुल्क लिए ही प्राणिमात्र को जल, हवा, प्रकाश आदि देता रहता है। यहाँ तक बुद्धि की वृद्धि के लिए वेदज्ञान भी सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चार ऋषियों द्वारा दिया ताकि मानव मात्र वेद-ज्ञान को प्राप्त कर अपने जीवन को सफल व सार्थक बनाते हुए अपने परम अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सके। प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और साहस की प्राप्ति होती है। उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होता है। यहाँ साक्षात्कार होने का तात्पर्य ईश्वर के दर्शन होना नहीं बल्कि ईश्वर का मुख्य गुण परम आनन्द की अनुभूति होना है। ईश्वर के पास अपने दो गुण विशेष हैं। पहला गुण ज्ञान और दूसरा आनन्द है, जिसे हम परम आनन्द कहते हैं। ज्ञान तो मनुष्यों की आवश्यकता के अनुसार वेदों में दे रखा है जो ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों के हृदय में प्रवेश करके उनसे दिलाता है जिनके अनुसार चलकर मनुष्य अपने परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करता है। दूसरी तरह से ज्ञान, मनुष्य ईश्वर की बनाई सृष्टि को देखकर ले सकता है। आनन्द, मनुष्य अपने जीवन में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार करते हुए समाधि अवस्था में पहुँचकर प्राप्त करता है और दूसरा तरीका ईश्वर की भांति परोपकारी कार्यों को करके प्राप्त कर सकता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने कहा है कि मनुष्य को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना नित्य सायं व प्रात: अवश्य करनी चाहिए।

जिस प्रकार हम किसी व्यक्ति से कोई चीज प्राप्त करते हैं तो उसे धन्यवाद देते हैं, उसी प्रकार ईश्वर हमें बिना शुल्क लिए हवा, पानी, रोशनी देता है, जिससे हमारा जीवन चलता है तो हमारा यह पावन कर्त्तव्य बन जाता है कि हम उस ईश्वर का हृदय से ध्यान करके उसे धन्यवाद देवें। यही हमारी ईश्वर के प्रति कृतज्ञता होगी।

ऐसे-ऐसे दस, बीस, पचास नहीं, सैकड़ों शंकाओं का समाधान आपको महर्षि कृत ग्रन्थों में मिलेगा। यदि कोई महर्षि के तीनों ग्रन्थों को न पढ़ सके तो कम से कम एक ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' को तो अवश्य पढ़े। इसी में उसकी सब समस्याओं का समाधान मिल जाएगा और वह अपना जीवन सुखमय व आनन्दित बनाकर एक सच्चा मानव या 'आर्य' बनकर अपने जीवन को सफल बनाते हुए सुखी व सम्पन्न जीवन जीते हुए मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी बन सकेगा।

जन्मदिन तथा गृहप्रवेश पर वेदप्रचार

झज्जर। श्री अनिल ठेकेदार सुपुत्र श्री सतबीर सिंह गाँव गोयलाकलां जिला झज्जर ने अपनी सुपुत्री लक्ष्मीदेवी की

पांचवीं जन्म दिवस पर वेदप्रचार का सुन्दर आयोजन किया। 3 फरवरी की रात को भजनों का कार्यक्रम तथा 4 फरवरी को प्रात:काल 8 बजे यज्ञ, भजन तथा प्रवचन हुआ जिसमें स्वामी शुद्धबोध जी तथा आचार्य सर्वमित्र जी ने गृहप्रवेश तथा जन्मदिन का यज्ञ किया। उसके बाद श्री तेजवीर आर्य भजनोपदेशक ने ईश्वरभक्ति के भजन रखे तथा आचार्य सर्वमित्र जी ने बहुत सुन्दर व्याख्यान दिया। स्वामी शुद्धबोध जी का आशीर्वाद हुआ और यशवीर आर्य का भी उपदेश हुआ।

श्री अनिल ठेकेदार के ताऊ श्री रामचन्द्र आर्य ने सभी विद्वानों का सत्कार किया। शान्तिपाठ के बाद भोजन की व्यवस्था की गई इस उपलक्ष्य में बादली, दुल्हेडा, खेड़का, कबलाना आदि आस-पास के अनेक गांव से गणमान्य व्यक्ति आये हुए थे। **-मनुदेव आर्य, गोयलाकलां (झज्जर)**

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महामहिम राज्यपाल हि.प्र. आचार्य देवव्रत जी अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महामहिम राज्यपाल हरियाणा श्री सत्यदेव नारायण आर्य अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महामहिम राज्यपाल हि. प्र. आचार्य देवव्रत जी का स्वागत करते सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महामहिम राज्यपाल हरियाणा श्री सत्यदेव नारायण आर्य का स्वागत करते सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महामहिम राज्यपाल हि. प्र. आचार्य देवव्रत जी का सम्मान करते राज्यपाल हरियाणा व सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महामहिम राज्यपाल हरियाणा श्री सत्यदेव नारायण आर्य का सम्मान करते राज्यपाल हि. प्र. व सभा पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महाशय धर्मपाल जी एम. डी. एच. अपने विचार रखते हुए।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महाशय धर्मपाल जी एम. डी. एच. का सम्मान करते राज्यपाल हरियाणा, राज्यपाल हि. प्र. व सभा पदाधिकारी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

द्वारा आचार्य बलदेव जी की स्मृति पर आयोजित

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

को सफल बनाने के लिए आप सभी आर्यजनों का

हार्दिक धन्यवाद।

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा